3.3.3.

SPECIAL ISSUE
January 2020

VIDYAWARTA®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

स्वयं वित्त पोषित,

एक दिवसिय राष्ट्रीय संगोष्ठी तिथि ४ जनवरी २०२०

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

हिंदी साहित्य में कृषक चेतना

संयोजक

हिंदी विभाग

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड.

श्री गजानन शिक्षण प्रसारक मंडल, येलदरी कैम्प द्वारा संचलित, (भाषिक मारवाडी अल्पसंख्यांक संस्था)

तोष्णीवाल कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,

सेनगाव, ता.सेनगांव, जि.हिंगोली

■ संलग्न ■

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

प्रा.एस.जी.तळणीकर
प्र.प्रधानाचार्य

प्रा.प्रमोद घन
संगोष्ठी सचिव

डॉ.शंकर पजई
संगोष्ठी संयोजक

डॉ.विजय वाघ
संगोष्ठी सह संयोजक

MAH/MUL/ 03051/2012
ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

संपादक

डॉ. शंकर रामभाऊ पजई

सह–संपादक

प्रा. प्रमोद किशनराव घन

डॉ. विजय गणेशराव वाघ

अतिथि संपादक

डॉ. रमेश संभाजी कुरे

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

13) गोदान : कृषक जीवन यथार्थ चेतना
लेफ्ट. डॉ. अनिता शिंदे, अहमदपूर ||65

14) हिंदी उपन्यासों में कृषक चेतना
प्रा. डॉ. रणजीत जाधव, ता. जि. लातूर ||67

15) अभंग–गाथा नाटक मेंचित्रित कृषक त्रासदी और विद्रोह
डॉ. रमेश संभाजी कुरे, जि. हिंगोली, महाराष्ट्र ||70

16) संजीव के उपन्यास 'फाँस' मे कृषक चेतना
डॉ. कांचन बाहेती (रांदड), नांदेड ||74

17) साठोत्तरी नाटकों में कृषक जीवन
डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ, हिंगोली, महाराष्ट्र ||78

18) हिंदी उपन्यासों में कृषक चेतना
डॉ. अर्शिया सैय्यद अफसरअली, नागपूर ||81

19) नागार्जुन की कविताओं में कृषक चेतना
डॉ. सुभाष क्षीरसागर, बसमतनगर ||84

20) गोदान उपन्यास में कृषक चेतना
डॉ. बळीराम संभाजी भुक्तरे, जि. लातुर, महाराष्ट्र ||87

21) किसानों के शोषण एवं अभाष ग्रस्तता का यथार्थ चित्रण पूस की रात
प्रा.डॉ. एम. डी. इंगोले, जि. परभणी, (महाराष्ट्र) ||90

22) मिथिलेश्वर के उपन्यास साहित्य में ग्राम संवेदना
प्रा.डॉ. दिग्विजय टेंगसे, औरंगाबाद ||91

23) नरेन्द्र निर्मोही कृत परनोट कहानी में कृषक चेतना
डॉ. पुष्पलता अग्रवाल, लातूर ||96

24) गोदान मे व्यक्त भारतीय किसान की त्रासदी
डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे, जिला नांदेड ||99

25) कभी न छोडें खेत उपन्यास में कृषक चेतना
डॉ. सविता चोखोबा किर्ते, लातूर ||102

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

21

किसानों के शोषण एवं अभाष ग्रस्तता का यथार्थ चित्रण पूस की रात

प्रा.डॉ. एम. डी. इंगोले
शोधनिर्देशक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष,
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय गंगाखेड,
जि. परभणी, (महाराष्ट्र)

****

प्रेमचंद की 'पूस की रात' कहानी उनकी श्रेष्ठत्म कहानियों में से एक है। यह किसानों के जीवन पर आधारित महत्वपूर्ण एवं समस्या प्रधान कहानी हैं। प्रेमचंद के शब्दों में ही कहे, तो उनका गोदान उपन्यास किसानों के जीवन का आख्यान है; तो पूस की रात कहानी किसानों के जीवन की वनस्थली हैं। यह कहानी, कलम का सिपाही के अनुसार, मई १९३० में माधुरी में छपी थी।[१] कहा यह भी जाता है कि, इस कहानी का विकसित रूप गोदान उपन्यास हैं। यह कहानी किसानों की ऋणग्रस्तता को रूपायित करती है।

वैसे देखा जाए तो भारतीय किसान सदियों से ऋण–ग्रस्तता और शोषण का शिकार होता आया हैं। पहले वह जमीनदारों, सेठ–साहुकारों, विदेशी आक्रमणकारियों से शोषित–ग्रसित था। अब आजाद भारत में सियासतदारों की खेती विषयक गलत नीतियों, चौकी चुंगी, अनाज मंडी के दलाल–ब्यौपारियों से शोषित हैं। भारतीय किसान को कई बार प्राकृतिक अपदाओं–सूखा–गीला अकाल, बाढ–ग्रस्तक्षेत्र, पशु–पक्षियों द्वारा फसल पस्त करना, फसल पर पडनेवाले विविध किट–रोगों का सामना करना पडता हैं। इन सारी विपदाओं को सहते हुए किसान के हाथों काली मिट्टी आती हैं। उसे ऋण–ग्रस्त होने के सिवाय और मजदूरी पर अपनी गुजरान करने के अलावा कोई चारा नहीं बचता हैं। यही नहीं खेती का फसल तो फसल, मजदूरी से अपनी जरूरतों के लिए जतन से जमा किए राशी से ऋण की किश्तें चुकानी पडती हैं। जो ऋण कभी खत्म ही नहीं होता हैं। ठीक इसी यथार्थ को प्रेमचंद ने प्रस्तुत कहानी की मूल संवेदना के रूप में गढा हैं। वर्तमान में हम यह देखते हैं, ऋण और अभावग्रस्तता के कारण किसान स्वहत्या करते नजर आ रहे हैं।

पूस की रात यह कहानी चार अनुभागों में विभक्त है। इस कहानी के कथा–विन्यास की तुलना जाने माने आलोचक डॉ.रामविलास शर्मा गोदान उपन्यास से करते हैं; कहानी में ताना–बाना फैलाने की गुंजाईश नहीं,... किन्तु इसके बिना होरी की कथा अधूरी रहेगी, m d sचरित्र का भरपूर विकास न होगा, वह कृषक जीवन का प्रतिनिधि पात्र न बनेगा पूस की रात रेखाचित्र है, भित्तिचित्र है गोदान यद्यापि यहाँ जिन घटनाओं का उल्लेख किया गया हैं, उनका विवरण पूस की रात में कम जगह घेरता हैं।[२]

अर्थात् 'पूस की रात' कहानी की कथावस्तु संश्लिष्ट है। संक्षेप में हल्कू और मुन्नी दोनों किसान पति-पत्नी हैं। उन्होंने मजदूरी करके तीन रूपये जाडे के दिनों में कंबल खरिदने के लिए जतन से रखे हैं। लेकिन सहना ऋण के पैसे लेने आता है। उसकी घुडकियाँ, गालियाँ सुनने से बहेत्तर उसे रूपये दे देना हल्कू पसंद करता हैं। भले ही उसे खेत में रखवाली के लिए ठंडी में सोना पडे। अर्थात् मुन्नी से कहकर सहना को पैसे देने के लिए कहता है; तब मुन्नी कहती है, कर चुके दूसरा उपाय! जरा सुनूं तो कौन उपाय करोगे? कोई खैरात दे देगा कंबल। न जाने कितनी बाकी है, जो किसी तरह चुकने में ही नहीं आती! मैं कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोडते? मर–मर काम करो, उपज हो तो बाकी दे दो; चलो छुटी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो। ऐसी खेती से बाज आए। मैं रूपये न दूंगी![३] इससे हल्कू की अभाव ग्रस्तता और ऋणग्रस्तता का पता चलता हैं। वह यह जानते हुए भी कि, कंबल खरिदने को उसके पास कोई उपाय नहीं है। फिर भी वह मुन्नी को कहकर सहना को पैसे देने के लिए कहता हैं। तब मुन्नी कहती है, तुम छोड दो अबकी

से खेती मजूरी में सुख से एक रोटी खाने को तो मिलेगी। किसी की धौंस तो न रहेगी। अच्छी खेती है। मजूरी करके लाओ, वह भी उसी में झोंक दो, उस पर धौंस।[४] पूस के दिन आने पर खेत की रखवाली के लिए हल्कु को जाना पडता है। उसकी मजबूरी और सफेद पोषक वर्ग का संकेत हल्कू की संवाद होता है। वह कहता है—

यह पछुआ न जाने कहाँ से बरफ लिये आ रही है। उठूँ, फिर एक चिलम भरूँ किसी तरह रात तो कटे! आठ चिलम तो पी चुका। यह खेती का मजा है। और एक भगवान ऐसे पडे हैं, जिनके पास जाडा जाए तो गरमी से घबडाकर भागे। मोटे—मोटे गद्दे, लिहाफ, कंबल। मजाल है, जाडे का गुजर हो जाए। तकदीर की खूबी है। मजूरी हम करे, मजा दूसरे लूटें।[५]

प्रेमचंद द्वारा हल्कू के माध्यम से किसान का नकारात्मक चित्रण किसी भी पेशेवर किसान को स्वीकार न होगा। कोई भी किसान अपनी आँखों के सामने फसल को नष्ट होते देख नहीं सकता! वह जी—जान से फसल की रखवाली करता है। जहाँ जबरा कुत्ता कडाके की ठंड में भी नील गायों को दौडा—दौडा कर भगाने का असफल प्रयास करता है; वहीं दूसरी और हल्कू ठंडी का बहाना करके नील गायों की चरने की आवाज आने पर भी नि:श्चेष्ट पडा रहता हैं। यहाँ प्रेमचंद की हल्कू के चरित्र सृष्टि में अतिशयोक्ति पूर्ण—रंजकता दिखाई देती हैं।

कहानी की भाषा अत्यंत सीधी, सरल, बोधगम्य, यथार्थपक हैं। यह कहना अनूचित नहीं होगा कि, प्रेमचंद ने शब्दों का कुशलता पूर्वक प्रयोग किया है हल्कू और मुन्नी के संवाद हल्कू से जबरा कुत्ते से किए गये संवादों में अत्यंत चुटिलापन, भाबूकता, मर्गस्पर्शीता एवं व्यंग्यात्मकता झलकती हैं। प्रकृति के सांकेतिक वर्णन की झलक कहानी में दिखाई देती है, जो काव्यात्मक रंग उभारती है।

संदर्भ ग्रंथ

१. प्रेमचंद और उनका युग—डॉ.रामविलास शर्मा (पृ.२७६)
२. वही, (पृ.२७९,८०)
३. कहानी और भाषाध्ययन—संपा.डॉ.नसिंह प्रसाद दुबे (पृ.१५७,५८)
४. वही, (पृ.१५८)
५. वही, (पृ.१५९)

22

मिथिलेश्वर के उपन्यास साहित्य में ग्राम संवेदना

प्रा.डॉ. दिग्विजय टेंगसे
हिंदी विभाग,
विवेकानंद कला, सरदार दलिपसिंग वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय औरंगाबाद

****

स्वतंत्रता के बाद ग्राम संवेदना का स्वरूप अत्यंत जटिल बन गया है। यह ग्राम जीवन के विभिन्न आयामों की बदलती हुई परंपरागत, गतिशील तथा स्थिर वास्तविकता तथा मानसिकता है। इसके अंतर्गत आधुनिकता बोध, वैचारिक स्वीकारोक्ति, सांप्रत जीवन की प्रभाव परिणती तथा विभिन्न सामाजिक बदलाव की क्रियाशीलता विद्यमान है।

वर्तमान ग्राम जीवन के विविध यथार्थ को देखते हुए यह अनुभव हो रहा है कि पिछली दो शताब्दियों की राजनीतिक, सामाजिक आदि उथल—पुथल के बाद स्वतंत्र भारत के गाँव आधुनिक संदर्भ और बदलते हुए परिवेश से अत्यंत प्रभावित हुए है। ग्राम जीवन की संशिष्ट चेतना को हिंदी कथाकारों ने जीवनानुभूतियों के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की है। स्वतंत्रता प्राप्ती के पश्चात भारतीय ग्रामों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। पुरानी मान्यताएँ टूटी और नयी मूल्य परंपरा विकसित हुई। शिक्षा के प्रसार, नगरीय सभ्यता से निकट यथेष्ट संपर्क एवं राजनीतिक गतिविधीयों के कारण ग्रामीणो के दृष्टीकोण में भी यथेष्ट परिवर्तन लक्षित हुआ। एक तरफ नये वैज्ञानिक उपकरण और जीवन के नये नये साधन गाँव में पहुँच रहे हैं और दूसरी ओर गाँव अपनी उन्हीं पुरानी रूढ़ियों और परंपराओं के शिकंजे में बुरी तरह जकड़े हुए है। नयेपन